RNI/MPHIN/2013/61414

ISSN 2278-0327
Refereed journal

ज्ञान-विज्ञान विमुक्तये

Approved by UGC

ज्योतिर्वेद - प्रस्थानम्

संस्कृत वाङ्मय की शोधपत्रिका - संस्कृत छात्रों की मार्गदर्शिका

षष्ठ वर्ष, चतुर्थ अंक

सितम्बर-अक्टूबर 2017

₹ 30

Bharatiya Jyotisham
पर्येति भावयन् लोकान्

भारतीय ज्योतिषम्

विषय - सूची

क्र. विषय	लेखक	पृ.सं.
१ भाषा के विकास हेतु प्रयोग विज्ञान की आवश्यकता	डॉ. परमेश कुमार शर्मा	02
२ ज्योतिषीय गणना पर आधारित जन्म से पूर्व के संस्कार	डॉ. देश राज शर्मा	04
३ वैदिक संहिताओं में सूर्य एवं सौर ऊर्जा	डॉ. आचार्य बृहस्पति मिश्र	08
४ अष्टाध्यायी-लघुवृत्ति में अव्ययीभावसमास का व्याख्यान	डॉ.महीपाल सिंह	11
५ वाल्मीकिसम्भवम् में छन्द योजनाः एक अध्यन	मीनाक्षि कुमारी आर्या	13
६ कालिकापुराणानुसार पूजनविधि विशेषतः देववस्त्र......	डॉ. विवेकशर्मा	17
७ हिमाचल में ज्योतिष - सर्वेक्षण की आवश्यकता	तिलकराज	20
८ भारतीय वास्तुशास्त्र में जीर्णोद्धार की प्रासङ्गिकता	विजय कुमार	22
९ माध्यमिक विद्यालयों के छात्रों की सामाजिक परिपक्वता ...	अजयब सिंह	24
१० सोनीपत के माध्यमिक विद्यालयों में राष्ट्रीयता की भावना...	अजय कुमार	32
११ पूर्ववर्ती आचार्यों का अप्पयदीक्षित पर प्रभाव 'चित्रमीमांसा'..	दुष्यन्त कुमार	38
१२ ज्योतिषशास्त्र की दृष्टि से वाणिज्य में अर्घ का महत्त्व	मुक्तेश कुमार गौतम	42
१३ वेद एवं इतिहास में लेखन परम्परा में विदुषियाँ	रूपा गौर (चन्द्रोल)	44
१४ श्रीमद्भगवद्गीता एवं उपनिषदों में निष्काम कर्मयोग	राघवेन्द्र सिंह भदौरिया	46
१५ संस्कृत-शब्द चिन्तन	डॉ. आचार्यबृहस्पतिमिश्र	50
१६ आधुनिक उपन्यास और स्त्री जीवन के नए संदर्भ	पूर्णिमा चौधरी	52

पुनरीक्षण समिति

प्रो. विद्यानन्द झा
प्राचार्यचर - राष्ट्रिय संस्कृत संस्थान, भोपाल परिसर, भोपाल

प्रो. क्षेत्रवासी पण्डा
अध्यक्ष - तुलनात्मक भाषा एवं संस्कृति विभाग
बरकतउल्ला विश्वविद्यालय, भोपाल

प्रो. भारतभूषण मिश्र
अध्यक्ष - ज्योतिषविभाग
राष्ट्रिय संस्कृत संस्थान, मुम्बई परिसर, मुम्बई

प्रो. हंसधर झा
अध्यक्ष - ज्योतिषविभाग
राष्ट्रिय संस्कृत संस्थान, भोपाल परिसर, भोपाल

डॉ. सनन्दन कुमार त्रिपाठी
वरिष्ठसहायकार्य
राष्ट्रिय संस्कृत संस्थान, भोपाल परिसर, भोपाल

ISSN 2278 - 0327

वैदिक संहिताओं में सूर्य एवं सौर ऊर्जा

डॉ. आचार्य बृहस्पति मिश्र

वैदिक संहिताओं में सूर्य को जगत् की आत्मा कहा गया है-''सूर्य आत्मा जगतस्तस्थुषश्च''।[1] वैदिक ऋषि की सूर्य के विषय में यह उक्ति अर्थवाद नहीं, अपितु सृष्टि के केन्द्र में स्थित सूर्य के विषय में ऋषियों के अगाध ज्ञान का संकेत है। वैदिक संहिताओं में न केवल सूर्य के आध्यात्मिक एवं अधिवैदिक स्वरूप का वर्णन है, अपितु आधिभौतिक स्वरूप का भी अनेकशः निरूपण है। ऋग्वेद में प्रत्यक्षतः भी सूर्य की भौतिक ज्योति-जो इस लोक अन्धकार का अपनयन करती है, अधिदैविक उत्तर ज्योति-जो देवों के मध्य निवास करती है; आध्यात्मिक उत्तम ज्योति-उपर्युक्त दोनों प्रकार की ज्योतियों से बढ़कर यह आध्यात्मिक ज्योति है, इन त्रिविध ज्योतियों का वर्णन है-

उद्वयं तमसस्परि स्वः पश्यन्त उत्तरम्। देवं देवत्रा सूर्यमगन्म ज्योतिरुत्तमम्।[2]

''सूर्य'' शब्द की व्युत्पत्ति-

शाब्दिक व्युत्पत्ति की दृष्टि से ''स्वृ शब्दोपतापयोः, षूङ् प्रेरणे, सु+ई गतौ कम्पने च'' इन तीन धातुओं से क्यप् प्रत्ययान्त ''सूर्य'' शब्द निष्पन्न होता है-''सुवति प्रेरयति कर्मणि लोकमिति सूर्यः''।[3] निरुक्तकार ने भी इन धातुओं से ही सूर्य की व्युत्पत्ति मानी है।[4] इस प्रकार व्युत्पत्तिलभ्य अर्थ के आधार पर समग्र जीवों को स्व-स्व कर्मों में प्रेरित करने वाला देव ''सूर्य'' संज्ञा से अभिहित हुआ।

सूर्य के समानार्थक शब्द-

अमरकोशकार ने सूर्य के सैंतीस नामों का उल्लेख किया है। वैदिक वाङ्मय में आदित्य, सविता, भग, सूर्य, पूषा, विष्णु एवं इन्द्र इत्यादि शब्द सूर्य के पर्याय रूप में पठित हैं।

शतपथ ब्राह्मण में आदित्य को सूर्य कहा गया है ''असौ वा आदित्यः सूर्यः''।[5] निरुक्तकार ''सविता'' पद का निर्वचन करते हुए कहते हैं-''सविता सर्वस्य प्रसविता'' अर्थात् सविता सबका प्रेरक अथवा जनने वाला है। एक स्थल पर वे कहते हैं-''आदित्योऽपि सविता उच्यते''।[6] आचार्य सायण के अनुसार सूर्योदय से पूर्व सूर्य को ''सविता'' कहा जाता है तथा उदय से अस्त होने तक सूर्य कहलाता है।[7]

निरुक्तकार के अनुसार 'भग' सूर्य का पर्याय वाचक शब्द है। सविता काल के पश्चात् उत्सर्पण (ऊपर आकाश में चढ़ने) से पहले का यह काल 'भग' नाम उत्तम ज्योति का है।[8] इस भाव को और स्पष्ट करते हुये वे कहते हैं 'भग' देव अन्ध है, (वह) सूर्यभाव प्राप्त होने से पहले दिखाई नहीं देता है-''अन्धः भगः इत्याहुः। अनुत्सृप्तो न दृश्यते''।[9]

पूषा (पूषन्) सूर्य की पोषण शक्ति के प्रतिनिधि देव है। निरुक्तकार के अनुसार ''अथ यद् रश्मि पोषं पुष्यति तत्-''पूषा भवति'' अर्थात् जब सूर्य तेज से पूर्ण होकर रश्मियों को धारण करता है, उस समय (वह) ''पूषा'' कहलाता है।[10]

''अथ यद् विषितो भवति तद्-विष्णुः। विशतेर्वा। व्यश्नोतेर्वा'' व्यापनशील होने से, विभु होने से सर्वत्र प्रवेश करने वाला है । अतः विष्णु को सूर्य के क्रियाशील रूप का प्रतिनिधि कहा गया है।[11] आचार्य और्णवाभ के अनुसार प्रातः काल, मध्याह्न काल एवं सायंकाल के तीन रूप ही विष्णु के तीन पाद हैं-''समारोहणे, विष्णुपदे, गयशिरसि-इति और्णवाभः''।[12] सूर्य ही विष्णु के रूप में सब लोकों को धारण करता है।[13]

महर्षि दयानन्द ने अपने वेदभाष्य में अनेकत्र इन्द्र शब्द को सूर्य का वाचक कहा है।[14] ऋग्वेद में सूर्य इन्द्र के विशेषण के रूप में भी प्राप्त होता है। वहाँ कहा गया है कि रथचक्र के समान गतिशील रहते हुये अपनी कान्ति से सृष्टि के चारों और फैले काले अन्धकार को नष्ट करता है-

स सूर्यः पर्युरूवरास्येन्द्रो ववृक्तयाद्रथ्येव चक्रा।
अतिष्ठन्तमपस्यं न सर्गं कृष्णा तमासि त्विष्या जघान।[15]

सूर्य की उत्पत्ति-सूर्य की उत्पत्ति के विषय में वैदिक वाङ्मय में अनेक संदर्भ प्राप्त होते हैं। ऋग्वेद के पुरुष सूक्त में विराट पुरुष की चक्षु से सूर्य की उत्पत्ति बताई गई है-चक्षोः सूर्योऽजायत।[16] शतपथ ब्राह्मण में कहा गया है कि ''सोऽकामयत। भूय एवं स्यात् प्रजायेतेति। स वायुनाऽन्तरिक्षं मिथुनं समभवत्। तत् आण्डं समवर्तत । तद् अभ्यमृशद् यशो बृहतीति। ततोऽसावादित्योऽसृज्यत। एष वै यशः। यदश्रु संक्षरितमासीत् सोऽश्मा पृश्निरभवत्। ..... अथ यः कपाले रसो लिप्त आसीत् ते रश्मयोऽभवन्। अथ यत् कपालमासीत् सा द्यौरभवत्''। अर्थात् उस प्रजापति ने कामना की। अधिक होवें, प्रजा उत्पन्न करें। उसने वायु द्वारा अन्तरिक्ष के साथ मिथुन संयोग किया। उससे अण्ड-पुत्र उत्पन्न हुआ। उसे इसने छुआ, यश को धारण करो, इन शब्दों के साथ उससे वह आदित्य उत्पन्न हुआ। वही निश्चय यश है। जो अश्रु संक्षरित हुआ, वह अश्मा पृश्नि हुआ।..... तब जो कपाल में रस लिप्त था, वे